

# चीनी के छोटे पैकेट बनाने की तैयारी

## एनएसआई की ओर से आयोजित वेबिनार में बनी सहमति

जागरण संवाददाता, कानपुर : भविष्य में चीनी दो तरह की बनाई जाएगी। एक फूड इंडस्ट्रीज, दवा और कोल्ड ड्रिंक निर्माता कंपनियों के लिए होगी, जबकि दूसरी आम उपभोक्ता के लिए बनेगी। संक्रमण की आशंका पर इनकी पैकेजिंग छोटे पैकेट्स में की जाएगी, जिससे इनकी आसानी से होम डिलीवरी हो सकेगी। यह सहमति बुधवार को एनएसआई की ओर से आयोजित वेबिनार में देशभर के चीनी कारोबारियों के बीच बनी। देश में चीनी सरप्लस होने से इंडोनेशिया और थाईलैंड में निर्यात करने पर हामी भरी गई।

अन्य उद्योगों की तरह चीनी का कारोबार भी कोरोना वायरस के संक्रमण के चलते प्रभावित हुआ है। ऐसे में भविष्य की चुनौतियों को देखते हुए नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) की ओर



### योजना

- फूड इंडस्ट्रीज और दवा कंपनी के लिए बनेगी अलग चीनी
- दो अलग-अलग सेगमेंट्स के लिए होगा चीनी का निर्माण

से कोविड-19 का भारतीय चीनी उद्योग पर असर विषय पर वेबिनार आयोजित हुआ, जिसमें देशभर के चीनी कारोबारी और विशेषज्ञ शामिल हुए। कई तरह के सवाल आए। मौजूदा स्थिति को देखते हुए रणनीति तैयार की गई। एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि चीनी की खपत वैश्विक स्तर पर कम

हुई है, जिसकी वजह से चीनी का निर्यात भी कम होने की आशंका है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में चीनी के दाम भी कम हो गए हैं। पिछले साल चीनी की खपत 260 लाख टन थी, जबकि इस बार और घट जाएगी। करीब 146 लाख टन चीनी गोदामों में है। इंडोनेशिया और थाईलैंड को निर्यात की जा सकती है। चीनी मिलों को फूड इंडस्ट्रीज और फार्मास्युटिकल कंपनियों के लिए सुपर रिफाइन चीनी बनानी होगी। अब तक 95 फीसद चीनी बोरे में पैक होकर आती है, जबकि केवल पांच फीसद मॉल और बड़ी दुकानों में पैकेट्स में मिलती हैं। संक्रमण की आशंका पर ढाई सौ ग्राम, आधा किलो, एक किलो के पैकेट बनाने होंगे। चीनी मिलें गन्ना किसानों की फसल तैयार करने में सहयोग करेंगी। उन्हें किराए पर कम लागत वाले उपकरण मुहैया कराए जाएंगे।

## वेबिनार : कोविड से चीनी उद्योग को झटका

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट में भारतीय चीनी उद्योग पर कोविड का प्रभाव विषय पर आयोजित वेबिनार में कहा गया कि कोरोना के फैलने से चीनी उद्योग को झटका लगा है। लॉकडाउन के चलते वाहन कम चलने से इथेनॉल की खपत में कमी आई है। इसके साथ ही चीनी उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। चीनी मिलों को मशविरा दिया गया कि इनोवेशन पर जोर दें और नए उत्पाद बाजार में उतारें। कृषि आधारित उत्पादों पर भी ध्यान दें।

एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा कि दो अलग तरह की चीनी का उत्पादन किया जाए। एक सामान्य उपभोक्ता के लिए और दूसरी औद्योगिक उपयोग के लिए। कुल चीनी की 60 फीसदी खपत औद्योगिक क्षेत्र में होती है। पेट्रोल में इथेनॉल की मात्रा 10 प्रतिशत से बढ़ाकर 12.5 प्रतिशत कर दिया जाना चाहिए। चीनी उद्योग ऑटो मोबाइल उद्योग के साथ मिलकर काम करे, जिससे इस तरह के इंजन तैयार किए जाएं जिनके ईंधन में इथेनॉल की अधिक खपत हो। इसके साथ ही उन्होंने चीनी मिलों को सैनिटाइजर के उत्पादन में आगे आने पर बल दिया। वेबिनार में विभिन्न राज्यों के ढाई सौ प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।